तात्या टोपे

कक्षा-8

प्रस्तुतकर्त्रीः डॉ• लाजो कपूर

1857 का स्वतंत्रता संग्राम

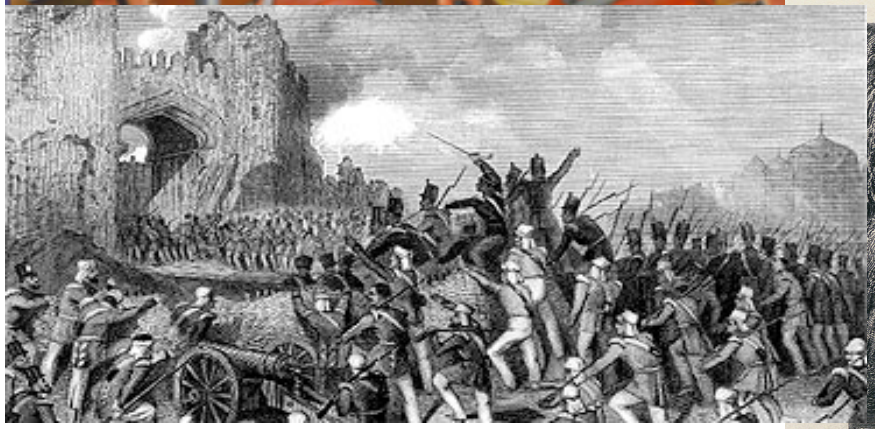

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी एवं उनके गठबन्धन

मंगल पांडे

bharatmatamandir.in

Bahadur Shah Zafar

बहादुर शाह ज़फ़र

नाना साहब

रानी लक्ष्मीबाई

तात्याटोपे

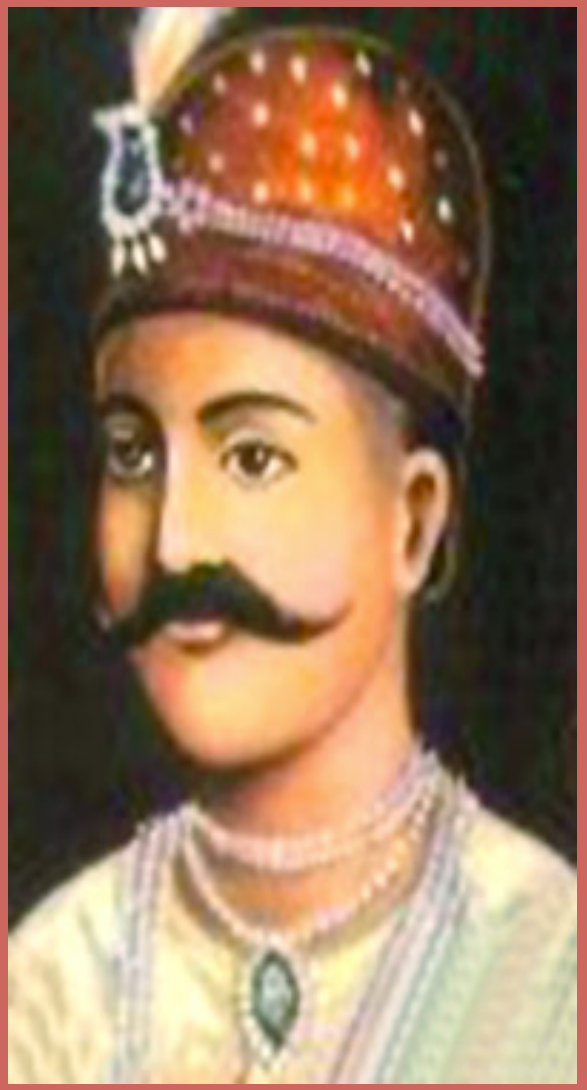

कुँवर सिंह

बेगम हज़रत महल

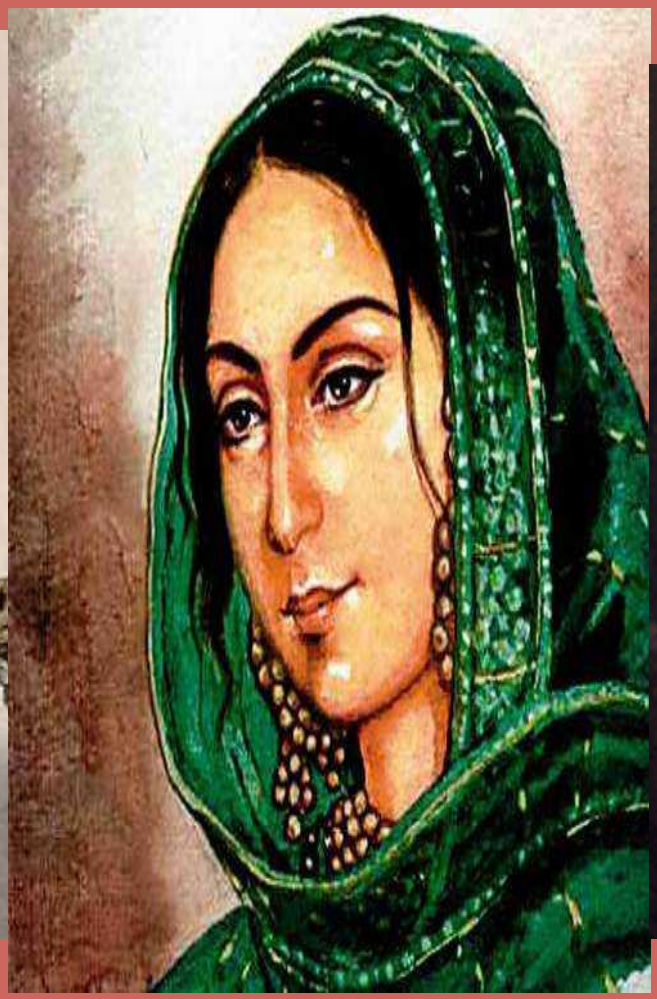

मौलवी लियाक्त अली

तात्या टोपे

तात्या टोपे का जन्म सन् १८१४ में हुआ था। उनका पूरा नाम 'रघुनाथ राव पांडु यवलेकर' था। सन् १८१८ में पेशवाई सूर्य अस्त हो चुका था। अंग्रेजों द्वारा पेशवा बाजीराव को आठ लाख रुपए पेंशन देकर कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया था। उस समय बालक रघुनाथ की अवस्था मात्र चार वर्ष की थी। पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब के साथ ही उनका पालन-पोषण हुआ। नाना साहब के बाल सखा होने के कारण दोनों में अटूट प्रेम था। यही कारण था कि क्रांति के समय भी तात्या टोपे पेशवा के दाहिने हाथ बने रहे।

जून १८५८ से लेकर १८५९ तक तात्या टोपे अंग्रेजों के विरुद्ध पूरी शक्ति से लड़ते रहे। कभी उनके पास तोपें होतीं तो कभी एक बंदूक भी न रहती। सेना के नाम पर कुछ मुट्ठी भर साथी रह जाते।

ग्वालियर की पराजय के बाद तात्या टोपे ऊबड़-खाबड़ भूभागों में अंग्रेजी सेना का सामना करते रहे। बिना युद्ध सामग्री के, बिना किसी विश्राम के अपनी सेना सहित एक स्थान से दूसरे स्थान पर अंग्रेजी सेना को छकाते हुए तात्या टोपे घूमते रहे। सीकर के युद्ध के बाद तात्या का भाग्य-सूर्य अस्त हो गया। राव साहब और फिरोजशाह उनका साथ छोड़ गए। निरुपाय होकर उन्होंने तीन-चार साथियों के साथ नरवर राज्य में पारोण के जंगलों में अपने मित्र मानसिंह के पास जाकर शरण ली।

७ अप्रैल, १८५९ को तात्या टोपे राजा मानसिंह के विश्वासघात के कारण मेजर मींड़ द्वारा गिरफ्तार कर लिये गए। उस समय उनके पास एक घोड़ा, एक खुखरी और संपत्ति के नाम पर ११८ मुहरें थीं। बंदी अवस्था में तात्या टोपे को सीप्री लाया गया। वहाँ पर एक सैनिक अदालत में उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें प्राणदंड दिया गया।

१८ अप्रैल, १८५९ की शाम ५ बजे तात्या को फाँसी के तख्ते पर लाया गया। वहाँ वे अपने आप ही फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए और अपने ही हाथों फाँसी का फंदा गले में डाल लिया और फिर भारत माता का यह रणबाँकुरा, फाँसी के फंदे पर झूल गया।

□

Old India Photos - Tatya Tope and troops, 1857

अंग्रेजों द्वारा 1859 में पकड़ लिया

धन्यवाद